ISSN : 2393-9362

साहित्य सरस्वती

Peer Reviewed Journal

वर्ष- बारह, अंक 45 । जनवरी-मार्च 2025

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय,सागर (म.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय संस्था सागर द्वारा विशिष्ट साहित्यकार को प्रति वर्ष दिया जाने वाला सम्मान **'श्री साहित्य सरस्वती सम्मान 2025'** इस वर्ष वरिष्ठ गीतकार डॉ. श्याम मनोहर सीरोठिया जी को प्रदान किया गया।

रानी अवंती बाई लोधी विश्वविद्यालय सागर के कुलगुरु प्रो .विनोद मिश्र जी को साहित्य सरस्वती पत्रिका के 44 अंक तथा सरस्वती प्रतिमा भेंट करते हुए श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय संस्था सागर के सदस्य

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय साहित्य साधना का ऐसा केन्द्र है जो सागर नगर के साहित्य प्रेमियों और साधकों को उदारता पूर्वक सहयोग देता है तथा मंच उपलब्ध कराता है। साहित्य सरस्वती त्रैमासिक पत्रिका के प्रकाशन के साथ इस संस्था के सहयोग से सागर के कवियों के लिए साहित्य सरस्वती काव्य मंच की स्थापना की गई जिसके संयोजक श्री नलिन निर्मल जैन हैं। यह काव्य मंच हर शनिवार को काव्य पाठ और काव्य विमर्श कार्यक्रम आयोजित करता है जिसमें नगर के वरिष्ठ-कनिष्ठ, नए-पुराने कवियों का समागम होता है। इस मंच की स्थापना को एक वर्ष पूर्ण हुआ। इस दौरान निरंतर काव्य पाठ और काव्य चिंतन पूरे जोश और उल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुए। इनमें नगर के वरिष्ठ कवि श्राी हरगोविन्द विश्व जी, श्री लक्ष्मी नारायण चौरसिया, पूरन सिंह, गजाधर सागर, छत्रसाल जी, बिहारी सागर, वृन्दावन राय सरल, अनिल जैन जी, आदि की उपस्थिति मंच को गरिमामय बनाती रही है। यह मंच नगर के नए कवियों को अवसर उपलब्ध कराता है। संस्था के सचिव पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी तथा अध्यक्ष के.के. सिलाकारी जी का संरक्षण प्राप्त कर यह मंच साहित्य जगत को समृद्ध बना रहा है।

Scanned with OKEN Scanner

साहित्य सरस्वती

हिन्दी त्रैमासिक

वर्ष- बारह, अंक 45 । जनवरी-मार्च 2025

प्रधान संपादक

प्रो. सुरेश आचार्य

संपादक

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

उप-संपादक

प्रो. पुरुषोत्तम सोनी

डॉ. ऋतु यादव

व्यवस्था एवं परामर्श

- के. के. सिलाकारी, एडवोकेट, अध्यक्ष
- पूर्व सांसद लक्ष्मीनारायण यादव, न्यासी
- डॉ. मीना पिम्पलापुरे, न्यासी
- पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी, सचिव

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय सागर की त्रैमासिक पत्रिका

Scanned with OKEN Scanner

ISSN - 2393-9362
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा अनुमोदित जर्नल नं. 47704
Peer reviewed journal **वर्ष- बारह, अंक 45 । जनवरी-मार्च 2025**

विषय विशेषज्ञ समिति

प्रो. सुरेश आचार्य, डी.लिट्.,अवकाश प्राप्त, हिन्दी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय, डी.लिट्., अध्यापक, हिन्दी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

डॉ. मधु संधु, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, पंजाब

डॉ. राजीव रंजन गिरी, हिन्दी विभाग,
राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपर्क - सचिव, श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय ट्रस्ट,
गौर मूर्ति, सागर (म.प्र.)
फोन : 07582-243759, मो. : 9406519191

- **लेखकों के विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।**
- **समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र सागर (म.प्र.) होगा।**
- **सभी पद पूर्णतः निःशुल्क और अवैतनिक हैं।**
- **रचनाओं के लिए किसी भी प्रकार के भुगतान की व्यवस्था नहीं है।**

आवरण
नवल किशोर मिश्र, सागर

अक्षर संयोजन एवं मुद्रण
एन.डी. पब्लिकेशन, दिल्ली
मो. 9039390856

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

5 **सम्पादकीय – सुरेश आचार्य**
7 **हस्तक्षेप– डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय**
धरोहर –
04 **मधुर नज़्मी** – ग़ज़लें
11 **मोहनदास करमचंद गाँधी** – सर्वोदय
16 **प्रो. श्री अक्षयकुमार बन्द्योपाध्याय एम. ए.** – मृत्यु से अमृत की ओर
लेख –
23 **राजी सेठ** – अपना कमरा
29 **शरद जोशी** – पुराने पेड़ की बातें
32 **डॉ. किरन श्रीवास्तव**– रेत–समाधि : योग, संयोग और प्रयोग
39 **डॉ. कुमारी उर्वशी** – मन्नू भंडारी की 'एक कहानी यह भी'
50 **डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर** –महाकाव्य–काल में जल–संरक्षण
कहानी –
53 **सारिका भूषण** – वो पंद्रह घंटे
58 **सुषमा मुनीन्द्र** – कोरोना के साइड इफैक्ट
65 **महेश कुमार केशरी** –किक
70 **डॉ. रमाकांत शर्मा**– ए लव स्टोरी
लघुकथाएँ –
57 **डोली शाह**
87 **किशन लाल शर्मा** – अकेला, प्यार का नशा
106 **आभा सिंह**
80 **यात्रा वृत्तान्त– विनोद साव** –होसपेट, हम्पी और तुंगभद्रा
कविताएँ/दोहे –
64 कृष्णकुमार प्रजापति
74 आशा पाण्डेय ओझा'आशा'
75 केशव शरण
76 लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
77 किशोरी लाल व्यास
78 रामशंकर भारती
79 आरती स्मित
87 अशोक सिंह
89 ऋषभ समैया
99 उदयकरण सुमन
103 अनिमा दास
106 सुनीलचंद्र
109 मैथलीशरण गुप्त
90 **फ्रांसीसी से अनुवादित कहानी**
'ए पीस ऑफ स्ट्रिंग' – गी दि मोपासां
(1850 – 1893)
छोटी सी डोरी–शशांक दुबे (अनुवादक)
समीक्षाएँ –
95 **अवध बिहारी पाठक**– वो सुबह कभी तो आएगी (निबंध संग्रह)–लक्ष्मी पाण्ड्ेय
100 **वीरेन्द्र परमार**– अभिशापित द्विधाग्रस्त द्वापर –डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर
104 **श्याम सुंदर चौधरी**– व्यस्त चौराहे (कहानी संग्रह) मीनाधर पाठक
107 **डॉ. पंकज साहा**– कमर मेवाड़ी की कविता– कमर मेवाड़ी
49 पत्रिकाएँ मिलीं
31 पुस्तकें मिलीं
38 श्रद्धांजलि

Scanned with OKEN Scanner

धरोहर-

गज़लें– मधुर नज़्मी

(1)

क्यूँ न लिक्खूँ जहाजरानी पर
रास्ते तैरते हैं पानी पर।

देखकर एहतराम नाजाँ हूँ
मैं समुन्दर की मेजबानी पर।

हर अदा में तरंग होती है
जोश आता है जब जवानी पर।

दिन के लम्हे भी रश्क करते हैं
रात की जागती कहानी पर।

ऐब रखने का हक किसी को नहीं
मेरी तहजीबे – खानदानी पर।

सब जमाने में सर झुकाते हैं
ऐ गजल तेरी हुक्मरानी पर।

मेरे मन के हसीन मौसम को
नाज है तेरी बागवानी पर।

कह दे कोई ये जुल्म वालों से
रख नजर कद्रे आसमानी पर ।

फख्र करते हैं सब कलम वाले
ऐ 'मधुर' तेरी जाँ–फिशानी पर।

(2)

जमीने खुश्क पर क्या गुल खिला है
समय की रेत का दामन भरा है।

यकीं मुझको भी कुछ – कुछ हो रहा है
मेरा चेहरा किसी कोलाज का है।

हसीं अन्दाज से मैं सोचता हूँ
मेरे एहसास का पैकर नया है।

जो इसमें बँध गया वो खुल न पाया
मुहब्बत का कुछ ऐसा सिलसिला है।

सफर लम्बा है पाँवों में हैं छाले
मुसाफिर रास्ते में सोचता है।

रियासत से तो कह पाना है मुश्किल
मगर सिद्दत से तो रिश्ता घना है।

गजल हिन्दी में मैं कहता हूँ लेकिन
असर उर्दू का भी मुझ पर रहा है।

गजल को आप रहने दें गजल ही
इसी फन में अदब का फलसफा है।

बहुत सपने बिखर कर खो गए हैं
परिंदा आसमाँ से गिर गया है।

हकीकत जान लेता है सभी की
'मधुर' का खूब अपना आईना है।

(3)

आँख ही की नमी से निकली है
ये सिसकती सदी से निकली है।

शाइरी जिसको आप कहते हैं
जज़्ब–ए–जिंदगी से निकली है

नग्मगी है जो शाइरी में मेरी
फिक्र की रोशनी से निकली है।

बात, तक्सीम घर के होने की
भाइयों की कमी से निकली है।

जो हरारत है मेरी गजलों में
लफ़्ज़ की ताजगी से निकली है

आप जिस आग से परीशां हैं
वो बुझी राख से ही निकली है।

कर गई वो 'मधुर' असर दिल पर
बात जो सादगी से निकली है।

Scanned with OKEN Scanner

सम्पादकीय

ईस्वी सन् दो हजार चौबीस की विदाई हो गई। मगर जाते–जाते वह अपने साथ पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी को भी ले गया। भारतीय अर्थ–शास्त्र के परम विद्वान सरदार मनमोहन सिंह जितने ज्ञानी थे उतने ही सरल, नेक और देश भक्त थे। उनकी सरलता का राजनीति में सक्रिय लोगों को अनुकरण करने से बड़ा कल्याण होगा। देश का भी और राजनेताओं का भी। वे भारतीय अर्थशास्त्र को एक नया रूप देकर गए जिसका प्रभाव अब बखूबी दिखाई देने लगा है। उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि सहित आप सबको नये वर्ष की मंगलकामनाएँ।

बहुत बड़ा देश है हमारा। कभी कांधार कहलाने वाला अ़फगानिस्तान अलग हुआ। गांधारी जो कौरवों की माँ थी। कांधार राजकुल की बेटी थी। फिर बर्मा अलग हुआ, जिसे काम और नौकरी के लिए अच्छा माना जाता था। बर्मा, याने म्यांमार जिसकी राजधानी रंगून को लेकर गाने जोड़े जाते थे। यथा नायिका नाच – गाकर बताती थी–

मेरे पिया गये रंगून, वहाँ से किया है टेलीफून।
तुम्हारी याद सताती है, जिया में आग लगाती है।

पाकिस्तान का बंटवारा एक भारी खून खराबे के बाद हुआ। सैंतालीस के चौदह अगस्त को पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान बने। पंद्रह अगस्त को भारत ने लोकतांत्रिक स्वरूप पाकर सर्वधर्म समभाव, धर्मनिरपेक्ष और सबको समानाधिकार देने वाला गणराज्य बनकर कीर्ति प्राप्त की। उन्नीस सौ सैंतालीस में बने पूर्वी पाकिस्तान ने उन्नीस सौ इकत्तर आते आते बांग्लादेश में खुद को परिवर्तित कर लिया। अभी–अभी हुए विद्रोह के बाद वहाँ अभी भी मारकाट जारी है। बांग्लादेश के निर्माण का श्रेय भारत की तत्कालीन सेना को जाता है जिसने पाकिस्तान के एक लाख सिपाहियों को हथियार डालने पर विवश कर दिया था। श्री लंका भी इसी महादेश का टुकड़ा रहा है।

आप कहेंगे क्या भौगोलिक बातें हो रही है सो भाई जी मुझे आभास हो रहा है कि यह सन् दो हजार पच्चीस पाक अधिकृत कश्मीर याने पी.ओ.के. को भाग्यवान बनाने वाला है अर्थात् पी. ओ.के. घर वापसी कर सकता है। वह भारत का हिस्सा था, है और रहेगा। इस दृष्टि से इसी वर्ष में यह शुभ कार्य हो सकता है।

जीवन को गंभीरता से लेना चाहिए। पल, घंटे, दिन, माह, वर्ष और युग आते रहते हैं। जिंदगी चलती रहती है, एक चादर की तरह जिसे कबीर ने जतन से ओढ़कर ज्यों की त्यों रख दी। जा चादर सुर नर मुनि ओढ़ी, ओढ़ के मैली कीन्ही चदरिया। दास कबीर जतन से ओढ़ी, जस की तस धर दीन्ही चदरिया।

Scanned with OKEN Scanner

कई लोग ध्यान ही नहीं देते कि समय कितनी तेज रफ्तार से चलता है। किसी ने चेताया है–

गफ़लत में खोई जिंदगानी, बेखबर तेरी,
करले खबर तेरी चादर हो गई पुरानी ।

मतलब उम्र हाथों से फिसल गई। कुछ परोपकार, देश काज बिना ही समय निकल गया। समय है तो समय पर विजय प्राप्त करने वाले हैं। हमारे वेद–पुराण कुछ कालजयी लोगों का उल्लेख करते रहे हैं। सात चिरंजीवियों का उल्लेख तो यहाँ अप्रासंगिक नहीं होगा।–

अश्वत्थामा, बलिर्व्यासो, हनुमानश्च विभीषणः।
कृपा, परशुरामश्च सप्तैति चिरजीविनः ।

और भी हो सकते हैं। मनुष्य क्या नहीं कर सकता। मनुष्य की देह धारण कर के ही कृष्ण ने उँगली पर गोवर्धन पर्वत उठाया। राम ने समुद्र पर पुल बना दिया। अर्थ यह कि जिसने जो बड़ा काम किया वह मनुष्य बन कर ही कर पाया। ऐसे मनुष्य के जीवन में बारंबार मंगल अवसर आते हैं तो वह स्वाभाविक है। इस अवसर पर नये वर्ष के लिए चलिए कुछ नया करें। कुछ ऐसा जो मनुष्य का, जीव और जगत का कल्याण करे। ज्ञान की नई सरणियाँ खुलें। अंतरिक्ष से सुनीता विलियम पृथ्वी पर लौटें। युद्ध और मारकाट बंद हो। इस बार नया वर्ष महाकुंभ पर्व मनाने का मंगल अवसर लेकर आया है। सरकार की प्रशंसनीय व्यवस्थाओं के बीच हम सब यह पर्व मनाएँ। स्वच्छता और अनुशासन का ध्यान रखते हुए सरकार की सहायता करें। यह पर्व हम सब के जीवन के दुख–कलुष और नकारात्मकताओं को धो डाले यही कामना करता हूँ। इस नये वर्ष की मंगल कामनाओं सहित।

सुरेश आचार्य
प्रधान सम्पादक

Scanned with OKEN Scanner